DEV SANSKRITI: Interdisciplinary International Journal (2018), 12, 15-21

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नारद भक्ति सूत्र एवं शाण्डिल्य भक्ति सूत्र में भक्ति के साधनों का तुलनात्मक अध्ययन

शिखा रानी

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नारद भक्ति सूत्र एवं शाण्डिल्य भक्ति सूत्र में भक्ति के साधनों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। भावनायें जीवन का आधार हैं। आज भावनात्मक अपरिष्कृति के कारण जीवन के सभी तलों पर समस्याएँ उत्पन्न हो गयी हैं, भक्ति द्वारा इन सभी का समाधान संभव है। भक्ति भगवान के प्रति परम प्रेम है। नारद भक्ति सूत्र एवं शाण्डिल्य भक्ति सूत्र भक्ति संबंधी सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्राचीन ग्रंथ है। नारद भक्ति सूत्र एवं शाण्डिल्य भक्ति सूत्र के तुलनात्मक अध्ययन पर कोई शोध कार्य तो नहीं हुआ है परन्तु नारद भक्ति सूत्र एवं शाण्डिल्य भक्ति सूत्र पर अलग–अलग कतिपय भाष्य अवश्य लिखे गये हैं। नारद भक्ति सूत्र एवं शाण्डिल्य भक्ति सूत्र के भक्ति प्राप्ति के साधनों को तुलनात्मक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि इसमे कुछ समानतायें व कुछ असमानतायें हैं। नारद भक्ति सूत्र व शाण्डिल्य भक्ति सूत्र में भक्ति के साधनों मे यह समानता है कि दोनों में प्रेमा भक्ति की प्राप्ति का प्रमुख साधन भक्ति (भक्तिपरक साधनों) को ही माना गया है। नारद भक्ति सूत्र एवं शाण्डिल्य भक्ति सूत्र में यह असमानता है कि नारद भक्ति सूत्र में सामान्य स्तर के व्यक्तियों के लिए भक्ति के साधनों को वर्णित किया गया है जबकि शाण्डिल्य भक्ति सूत्र में सामान्य तथा पापी दोनों स्तर के व्यक्तियों के लिए भक्ति के साधन वर्णित किये गये हैं। नारद भक्ति सूत्र एवं शाण्डिल्य भक्ति सूत्र में दूसरी प्रमुख असमानता यह है कि नारद भक्ति सूत्र में भक्ति का साधन केवल भक्ति को जबकि शाण्डिल्य भक्ति सूत्र में ज्ञान व भक्ति दोनों को माना है। व्यक्ति अपनी रूचि के अनुसार नारद भक्ति सूत्र एवं शाण्डिल्य भक्ति सूत्र में बताये गये भक्ति के साधनों का अवलंबन लेकर प्रेमा भक्ति की प्राप्ति कर सकता है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भक्ति द्वारा भावनाओं का परम परिष्कार हो जाता है जिसके परिणामस्वरूप वर्तमान समय की समस्त समस्याएँ अपना समाधान पा जाती हैं।

कूट शब्द – भक्ति, भावंना, नारद भक्ति सूत्र एवं शाण्डिल्य भक्ति सूत्र।

==========

भावनायें जीवन की जड़ हैं, मानवीय अस्तित्व का आधार हैं। आज भावनाओं में स्वार्थ, वासना व अहंकार घुल जाने के कारण भावनात्मक पवित्रता समाप्त हो गयी है। 'आज का सबसे बड़ा दुर्भिक्ष भावनाओं के क्षेत्र का है' (शर्मा, 1990, पृ0 2)। इसके कारण जीवन के सभी तलों पर समस्याएँ उत्पन्न हो गयी हैं।

वैयक्तिक स्तर पर अतृप्त भावनायें मनुष्य में अनेकों मनोवैज्ञानिक रोगों का कारण बन रही हैं यथा तनाव, निराशा, चिंता, अंतर्द्वन्द, कुण्ठा, विखण्डित व्यक्तित्व आदि। श्रीराम शर्मा का कहना है, "मनोरोग और कुछ नहीं दबी–कुचली रौंदी गयी भावनायें हैं" (पण्ड्या, 1990, पृ0 50)। अतृप्त भावनायें मनोरोगों के अतिरिक्त मनोकायिक रोगों यथा अनिद्रा, दमा, मधुमेह, कैंसर आदि को भी जन्म देती हैं। इन मनोवैज्ञानिक व मनोकायिक दोनों प्रकार के रोगों के वर्तमान आँकड़े चौंकाने वाले हैं।

पारिवारिक स्तर पर भी भावनात्मक संकीर्णता के कारण दुष्परिणाम उत्पन्न हो रहे हैं। "आज हम अत्याधुनिक युग में रहते हैं, परन्तु जो चीज खो गयी है वे हैं हमारे मधुर संबंध, संवेदनशील रिश्ते एवं इन रिश्तों की महक" (पण्ड्या, 2007, पृ0 4)। स्वार्थ व अहंकार के कारण रिश्तों की मधुरता समाप्त हो गयी है केवल औपचारिकता शेष रह गयी है। सामाजिक स्तर पर दूषित भावनाओं के कारण समाज में अनेकों विपन्नतायें जैसे हिंसा, चोरी, रिश्वत, व्यभिचार आदि सव्याप्त हैं। राष्ट्रीय स्तर पर भावनात्मक संकीर्णता के कारण जाति, वर्ण, धर्म, राज्य, संस्कृति के नाम पर झगड़े होते रहते हैं। भावनात्मक कलुषता के कारण ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर युद्ध होते हैं।

वर्तमान समय की इन समस्याओं को भक्ति के द्वारा समाप्त किया जा सकना संभव है। भक्ति भगवान के प्रति परम प्रेम है (ना0भ0सू0–2)। भक्ति से भावनायें पवित्र हो जाती हैं। भक्ति गहरी भावनात्मक तृप्ति प्रदान करती है। भक्ति के अति प्राचीन व अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ नारद भक्ति सूत्र एवं शाण्डिल्य भक्ति सूत्र हैं। नारद भक्ति सूत्र नारदजी द्वारा रचित है। इसमें भक्तिपरक 84 सूत्रों का संकलन है। शाण्डिल्य भक्ति सूत्र शाण्डिल्य जी द्वारा रचित है। इसमें 100 सूत्रों का संकलन है। प्राचीन काल में यद्यपि भगवत्प्राप्ति के उद्देश्य से इन दोनों सूत्रों की रचना की गयी परन्तु आज की समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में इनका महत्व असंदिग्ध ही नहीं वरन् पहले से भी अधिक है। आज मनुष्य को भक्ति की परम आवश्यकता है ताकि वर्तमान समस्याओं से निजात पायी जा सके।

इन दोनों सूत्रों मे भक्ति संबंधी सभी पक्षों को उजागर किया गया है। इस शोध पत्र में नारद भक्ति सूत्र व शाण्डिल्य भक्ति सूत्र मे भक्ति के साधनों का तुलनात्मक पक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है ताकि मनुष्य यह जान सके कि भक्ति की प्राप्ति किन साधनों द्वारा की जा सकती है। भिन्न–भिन्न मनुष्यों की प्रकृति भिन्न–भिन्न होती है तुलनात्मक अध्ययन द्वारा वे यह समझ सकते हैं कि उनकी प्रकृति के लिए कौन से साधन अधिक उपयोगी हैं।

1. साहित्य सर्वेक्षण

नारद भक्ति सूत्र पर कोई शोध कार्य तो नहीं हुआ है परन्तु इस पर हिंदी व अंग्रेजी में भाष्य लिखे जा चुके हैं। नारद भक्ति सूत्र पर हिन्दी में लिखे गये भाष्य इस प्रकार हैं– पोद्दार (सं0 2060) द्वारा रचित प्रेमदर्शन (देवर्षि नारद विरचित भक्तिसूत्र), विवेकानन्द (1994) द्वारा रचित नारद भक्ति सूत्र एवं भक्तिविवेचन, वेदांतानंद (2001) द्वारा रचित नारद भक्ति सूत्र, चिन्मयानन्द (2002) द्वारा रचित नारद भक्ति सूत्र, सरस्वती (2003) द्वारा रचित नारद भक्ति दर्शन, ओशो (2003) द्वारा रचित महर्षि नारद पर प्रीति प्रवचन सूत्र, पण्ड्या (2015) द्वारा रचित भक्तिगाथा–नारदभक्ति सूत्र का कथाभाष्य।

नारद भक्ति सूत्र अंग्रेजी में रचित भाष्य इस प्रकार हैं–

शर्मा (1938) द्वारा रचित 'नारद्स अफोरिज्म ऑन भक्ति'। प्रकाश (1998) द्वारा रचित 'द योगा ऑफ स्प्रिचुअल डिवोशनः ए मॉडर्न ट्रांसलेशन ऑफ नारद भक्ति सूत्र। प्रभुपाद (1998) द्वारा रचित 'नारद भक्ति सूत्रः द सीक्रेट्स ऑफ ट्रांसडेंटल लव।' शिवानंद (1998) द्वारा रचित 'नारद भक्ति सूत्राज'। भूतेशानंद (1999) द्वारा रचित 'नारद भक्ति सूत्राज'। तैमनी (2003) द्वारा रचित 'सैल्फ रियलाइजेशन थ्रू लव (नारद भक्ति सूत्र)'। रविशंकर (2009) द्वारा रचित 'नारद भक्ति सूत्र (अफोरिज्म ऑफ लव)'। ताओशोबुद्धा (2009) द्वारा रचित 'द सीक्रेट्स ऑफ भक्तिः एज़ नैरेटेड बाय सेज नारद। प्रभवानंद (2011) द्वारा रचित 'नारद' द वे ऑफ डिवाइन लव (नारद भक्ति सूत्राज)'। गोस्वामी (2013) द्वारा रचित 'वे टू लवः ए कमेंट्री ऑन द नारद भक्ति सूत्र'। त्यागीशानंद (2014) द्वारा रचित 'नारद भक्ति सूत्र'। महोनी (2015) द्वारा रचित 'एक्सक्वीसाइट लवः रिफ्लेक्शंस ऑन द स्प्रिचुअल लाइफ बेस्ड ऑन द नारद भक्ति सूत्र'।

शाण्डिल्य भक्ति सूत्र पर भी कोई शोध कार्य तो नहीं हुआ है परन्तु संस्कृत, हिन्दी व अंग्रेजी में कतिपय भाष्य उपलब्ध हुए हैं। संस्कृत का भाष्य इस प्रकार हैं– उपाध्याय (1998) द्वारा रचित 'शाण्डिल्य भक्तिसूत्रम् श्री नारायण तीर्थ विरचितया भक्तिचंद्रिकया समन्वितम्' (पृ0 148)। हिन्दी के भाष्य इस प्रकार हैं–महाराज (1998) द्वारा रचित भक्तिदर्शन, ओशो (2001)द्वारा रचित 'अथातो भक्ति जिज्ञासा' (भाग 1 व 2), भाईजी (2006) द्वारा रचित शाण्डिल्य भक्ति सूत्र, सरस्वती (2011) द्वारा रचित शाण्डिल्य भक्ति सूत्र।

शाण्डिल्य भक्ति सूत्र पर अंग्रेजी मे लिखित भाष्य इस प्रकार हैं–

कोवेल (1878) द्वारा रचित 'द अफोरिज्म ऑफ शाण्डिल्य विद द कमेन्ट्री ऑफ स्वप्नेश्वर'। शिवानंद (1984) द्वारा रचित 'भक्ति एण्ड संकीर्तन' पुस्तक में शाण्डिल्य भक्ति सूत्र पर एक अध्याय। यति (1991) द्वारा रचित 'शाण्डिल्य भक्ति सूत्र'। हर्षानन्द (2002) द्वारा रचित 'शाण्डिल्य भक्ति सूत्रः विद स्वप्नेश्वर भाष्य'।

2. नारद भक्ति सूत्र में भक्ति के साधन

नारदजी कहते हैं– 'ब्रह्मकुमारों के (सनत्कुमारादि और नारद के) मत से भक्ति स्वंय फलरूपा है' (ना0भ0सू0 –30) अर्थात् भक्ति ही साधन है और भक्ति ही साध्य है, मूल भी वही और फल भी वही। भक्तगण भक्ति के लिए ही भक्ति करते हैं क्योंकि भक्ति स्वयं फलरूपा है। वह न किसी साधन से मिलती है और न कोई उससे श्रेष्ठ वस्तु है जिसकी प्राप्ति का वह साधन हो (पोद्दार, सं0 2060, पृ0 56)। इसका तात्पर्य यह है कि नारदजी के मत से भक्ति का साधन कर्म, ज्ञान अथवा योग नहीं वरन स्वयं भक्ति है। भक्ति की प्राप्ति भक्ति से ही होती है और भक्ति रूपी साधन का फल भी भक्ति ही है।

नारदजी के अनुसार भक्ति के निम्न साधन हैं–

2.1 विषयत्याग एवं संगत्याग– नारदजी ने कहा है– 'वह (भक्ति–साधन) विषयत्याग और संगत्याग से संपन्न होता है' (ना0भ0सू0 –35)। यहाँ विषयत्याग का तात्पर्य विषयों का त्याग और संगत्याग का तात्पर्य विषयासक्ति के त्याग से है। महाभारत में भी यही कहा है–'विषयासक्ति और विषय दोनों के त्याग का नाम त्याग है'(महाभारतः शांतिपर्व – 192/17)। श्रीमद्भागवत में कहा गया है –'विषय का चिंतन करने के फलस्वरूप मन मुझमें लीन हो जाता है (श्रीमद्भागवत –11/14/27)। इसका तात्पर्य है कि विषयों का त्याग करने पर ही भगवद्भक्ति उत्पन्न होती है इसीलिए नारदजी ने भक्ति का प्रथम साधन विषयत्याग और संगत्याग को बताया है।

2.2 अखण्ड भजन– नारदजी ने कहा है– 'अखण्ड भजन से (भक्ति का साधन) संपन्न होता है' (ना0भ0सू0 –36)। 'भजन अखण्ड हो सके यह व्यवस्था जरा कठिन है क्योंकि कोई कितना भी तप करे, कितना भी जप करे, कितनी देर भी ध्यान लगाये परन्तु कभी न कभी, कहीं ना कहीं तो विराम लेगा ही। यह ठहराव न आये, भजन की भक्तिधारा अविराम प्रवाहित रहे यह तो तभी संभव है जब भक्त मिट जाये और रहे केवल भगवान ही

(पण्ड्या, 2015, पृ0 148)। इसका तात्पर्य है कि भगवान का स्मरण सतत हो, अखण्ड हो, उसमें तनिक भी विराम न हो। उनका स्मरण श्वास मे समा जाये। सतत अभ्यास से ही भजन अखण्ड होता है।

2.3 श्रवण और कीर्तन– नारद जी ने भक्ति के तृतीय साधन के संबंध में कहा है – 'लोक समाज में भी भगवद्गुणश्रवण और कीर्तन से (भक्ति साधन) संपन्न होता है' (ना0भ0सू0–37)। नारद जी का मानना है कि समाज में रहते हुए भी श्रवण और कीर्तन से भक्ति की प्राप्ति होती है। 'यदि भगवान की कथा को ठीक–ठीक सुना गया, हृदय के पट खोलकर सुना गया, केवल कानों से नहीं प्राणों से सुना गया तो निश्चित ही भगवान के गुणों को सुनते–सुनते, अंतःकरण में उनके स्मरण का सातत्य बनने लगेगा। जो सुना जाता है, वही बोध बन जाता है और हृदय से सुना हुआ धीरे–धीरे जीवन में रमता जाता है' (पण्ड्या, 2015, पृ0 152)। 'श्रवण के साथ कीर्तन भी जरूरी है। सुनना निष्क्रिय है तो कीर्तन सक्रिय है। निष्क्रियता मे सुनें तो सक्रियता में अभिव्यक्त करें' (पण्ड्या, 2015, पृ0 156)। श्रवण और कीर्तन यदि समूचे प्राण व हृदय की भावनाओं से किये जाते हैं तो भक्त को शीघ्र ही भक्ति की प्राप्ति होती है।

2.4 महापुरूषों की कृपा एवं भगवत्कृपा– नारद जी ने भक्ति प्राप्ति का सर्वप्रमुख साधन महापुरूषों की कृपा एवं भगवत्कृपा को बताया है। उनके शब्दों में, 'परन्तु (प्रेमा भक्ति की प्राप्ति का साधन) मुख्यतया (प्रेमी) महापुरूषों की कृपा से अथवा भगवत्कृपा के लेशमात्र से होता है' (ना0भ0सू0–38)। भगवान सबसे महान है। उन भगवान से जिसने अपने मन को एक कर दिया वह महान हो गया, वह महापुरूष है। 'भक्त महापुरूषों का संग, सदा ही भगवत्कृपा की पारसमणि की भाँति होता है, जिसका तनिक सा स्पर्श भी रूपांतरण करने मे समर्थ है' (पण्ड्या, 2015, पृ0 156)। जीवन में भक्ति का प्रमुख साधन ऐसे महापुरूषों की कृपा ही है। जिस प्रकार धनी ही धन दे सकता है उसी प्रकार भक्त ही भक्ति दे सकता है। श्रीमद्भागवत (5/19/20) में कहा गया है–'यह भक्तिभाव तभी प्राप्त होता है जब अनेक प्रकार की गतियों को प्रकट करने वाली अविद्यारूपी हृदय की ग्रंथि कट जाने पर भगवान के प्रेमी भक्तों का संग मिलता है।'

3. शण्डिल्य भक्ति सूत्र के अनुसार भक्ति के साधन

महर्षि शाण्डिल्य ने ज्ञान व गौणी भक्ति दोनों को भक्ति (प्रेमा भक्ति) का साधन माना है। उनके अनुसार इन साधनों के अभ्यास से चित्त शुद्धि होकर साधक को भक्ति की प्राप्ति होती है।

3.1 भक्ति प्राप्ति के ज्ञानपरक साधन

महर्षि शाण्डिल्य कहते हैं– 'बुद्धि के हेतुभूत श्रवण, मनन आदि साधनों में तब तक लगे रहना चाहिए जब तक कि अंतःकरण शुद्ध न हो जाये (शा0भ0सू0–27)। यहाँ श्रवण मनन आदि साधनों से तात्पर्य श्रवण, मनन व निदिध्यासन से है। गुरूमुख से उपदेश ग्रहण करने को श्रवण कहा जाता है। गुरू उपदेश को सुनने या वेदवाक्यों के अध्ययन के पश्चात् उन पर तर्क–वितर्क एवं युक्तिपूर्वक विचार करना मनन कहलाता है। सरस्वती (1998) के अनुसार, "मनन किये हुए विषय की अपने अंतरंग में अनुभूति कर लेना निदिध्यासन है।" महर्षि शाण्डिल्य ने इनका अभ्यास चित्तशुद्धि होने तक करने के लिए कहा है (पृ0 194)।

महर्षि शाण्डिल्य ने श्रवण मनन आदि साधनों के साथ–साथ उनके अंगों को भी करने का उपदेश देते हुए कहा है– 'ब्रह्मज्ञान के हेतुभूत जो श्रवण–मननादि साधन हैं, उनके अंगभूत गुरूसेवन, शास्त्रविचार तथा शम–दमादि साधनों का भी अंतःकरण की शुद्धि होने तक अनुष्ठान करते रहना चाहिए' (शा0भ0सू0 –28)। गुरू–सेवन करने के लिए इसलिए कहा गया है ताकि उनसे भक्ति संबंधी क्रियात्मक शिक्षा व उपदेश ग्रहण किये जा सकें। शास्त्रों के अध्ययन से बौद्धिक परिष्कार होता है। 'शम का तात्पर्य है मन का संयम अर्थात मन को वश में करना' (सरस्वती, 1998, पृ0 189)। 'दम का अर्थ है दमन करना। इसका तात्पर्य है वाह्य इंद्रियों यथा कर्ण, नेत्र आदि को उनके विषयों से हटा लेना' (सरस्वती, 1998, पृ0 190)।

3.2 भक्ति प्राप्ति के भक्ति संबंधी साधन

महर्षि शाण्डिल्य कहते हैं– '(गीता 11/36 में) कीर्तन से भगवान के प्रति अनुराग होने की बात कही गयाी हैः अतः जैसे कीर्तन अनुराग में हेतु होता है, उसी प्रकार उसके साहचर्य से भगवन्नाम–श्रवण–वंदन आदि जो अन्य भजन प्रकार हैं, वे भी अनुरागरूपा परा भक्ति की प्राप्ति कराने वाले हैं, ऐसा मानना चाहिए' (शा0भ0सू0 –57)। यहाँ महर्षि शाण्डिल्य का तात्पर्य नवधा भक्ति से है।

नवधा भक्ति

'श्रवणं कीर्तनं विष्णोःस्मरणं पादसेवनम् अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यात्मनिवेदनम्'। श्रीमद्भागवत पुराण – 7/5/23

3.2.1. श्रवण – इसका वर्णन किया जा चुका है।

3.2.2. कीर्तन – इसका भी वर्णन किया जा चुका है।

3.2.3. स्मरण – भगवान के नाम, रूप, गुण और लीला की स्मृति स्मरण भक्ति है। स्मरण का प्रभाव स्थूल जगत के अतिरिक्त विशेषकर सूक्ष्म अंतरिक्ष और मानसिक जगत पर पड़ता है। तुलसीदास जी ने कहा है– जो राम का स्मरण करके द्रुत और पुलकित नहीं होता उसका जीवन वृथा है (दोहावली –41)।

'भगवान श्री कृष्ण के चरण कमलों की अविचल स्मृति सारे पाप ताप अमंगलों को नष्ट कर देती है और परमशांति का विस्तार करती है। उसी के द्वारा अंतःकरण शुद्ध होता है और भगवान की भक्ति प्राप्त होती है' (श्रीमद्भागवत – 12/12/54)।

3.2.4. पादसेवन– इसका अर्थ है– भगवान के चरणों की सेवा अर्थत् चरण स्पर्श, पाद–प्रक्षालन, चरण–प्रोक्षण, साष्टांग दण्डवत्, चरण–चापन आदि। इसमें भक्त भगवान के अनंत ऐश्वर्य, प्रभाव, महत्व, शक्ति, प्रतिष्ठा, गुणों का आधिक्य और चरित्र की अलौकिकता आदि देखकर जानकर अपने सेव्य के रूप में भगवान का वरण कर लेता है और उनके चरणों की सेवा के रस में ही स्वयं को अर्पित कर देता है।

3.2.5. अर्चन– 'श्रवण आदि से भिन्न श्री विष्णु की प्रीति प्राप्त करने के हेतु रूपी क्रिया कलाप को उनकी प्रतिमा को गंध–पुष्प आदि अर्पण करने को अर्चन या पूजन कहते है' (उपाध्याय, 1998)। इस पूजा के अंतर्गत प्रभु की प्रतिमा की प्रतिष्ठा करके उसका षोडशोपचार या पंचोपचार पूजन किया जाता है। श्रीकृष्ण भगवान ने कहा है– 'यदि कोई मुझे भक्तिपूर्वक पत्र, पुष्प, फल, जल अर्पित करता है तो मैं उस भक्तिमय उपहार को आग्रहपूर्वक ग्रहण करता हूँ' (भगवद्गीता– 9/26)।

3.2.6. वंदन– 'भगवान के समक्ष अपना दैन्य प्रकाशित करते रहकर नमन प्रणाम आदि करना वंदन भक्ति' है (पोद्दार, 1998, पृ0 195)। यह स्तुति, स्तोत्र व प्रार्थना का एक अत्यंत प्रभावशाली व सफल रूप है।

3.2.7. दास्य– भगवान स्वामी हैं, मैं उनका सेवक हूँ– अनन्य भक्ति की इस अटल मति को दास्य कहते हैं। दास्य भाव के आदर्श श्रीहनुमानजी हैं। प्रभु श्रीराम ने उन्हे सेवा का मर्म समझाते हुए कहा था कि मुझे सेवक, उनमें भी अनन्य गति सेवक बहुत प्रिय है। मेरा अनन्य सेवक वही है जिसकी ऐसी बुद्धि कभी नही टलती कि यह चराचर जगत मेरे स्वामी का व्यक्त रूप है और मैं इसका सेवक हूँ (रामचरितमानस –4/3)।

3.2.8. सख्य– भगवान को सखा मानकर भक्ति करना सख्य भक्ति है। सरवा के तीन लक्षण बताये गये हैं– अहितकर कर्म करने से रोकना, मंगल कार्य में प्रवृत्त करना और आपात्काल मे साथ न छोड़ना। इन सखिधर्म से युक्त भगवान का भावन सख्य है इसमे बंधुभाव की प्रधानता है। अर्जुन सख्यभक्ति के आदर्श कहे जाते हैं।

3.2.9. आत्मनिवेदन– भक्त के द्वारा भगवान के प्रति सर्वतोभावेन अपने शरीर आदि का एकमात्र उसी के भजनार्थ किया गया अर्पण आत्मनिवेदन है। महाराज बलि आत्मनिवेदन भक्ति के आदर्श माने जाते हैं।

आगे महर्षि शाण्डिल्य आप्त प्रमाण देते हुए कह रहे हैं– '(गीता – 9/13 से लेकर 9/29 तक के) बीच में (9वें अध्याय के 14, 15, 22, 25, 26, 27, 28 इन श्लोको में) जो कीर्तन, भजनार्थ यतन, व्रत, नमस्कार, ज्ञानयज्ञ, ध्यान, याग(पूजा), दान, सर्वकमार्पण आदि शेष गौणी भक्तियों का श्रवण होता है, वे सब की सब पराभक्ति की ही अंगभूत हैं' (शा0भ0सू0 –58)। इन सब साधनों का वर्णन इस प्रकार है–

1. कीर्तन– इस का वर्णन किया जा चुका है।

2. भजनार्थ यतन– भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं –"जो अनन्य प्रेमी भक्तजन मुझ परमेश्वर को नित्य चिंतन करते हुए निष्काम भाव से भजते हैं, उन नित्य निरंतर मेरा चिंतन करने वाले पुरूषों का योगक्षेम मैं स्वयं प्राप्त करा देता हूँ" (भगवद्गीता, 9/22)। इसका अभिप्राय यह है कि जिन भक्तों में भगवान के सिवाय और कोई भी इच्छा नहीं रहती, जो निष्काम भाव से सतत भगवान को ही भजते हैं उनके योगक्षेम अर्थात् भगवत्स्वरूप की प्राप्ति और भगवत्प्राप्ति के निमित्त किये हुए साधन की रक्षा भगवान स्वंय करते हैं।

3. व्रत– किसी नियम के संकल्प को व्रत कहते हैं। गीता (भगवद्गीता 9/14) में भगवान कहते हैं कि दृढ व्रती लोग मेरी उपासना करते हैं।

4. नमस्कार– नमस्कार का तात्पर्य है भगवान को हर समय प्रणाम करना।

5. ज्ञानयज्ञ– ज्ञानयोगी साधक ज्ञानयज्ञ से भगवान की उपासना करते हैं। श्री कृष्ण कहते हैं–"दूसरे साधक ज्ञानयज्ञ के द्वारा एकीभाव से मेरा पूजन करते हुए मेरी उपासना करते हैं" (भगवद्गीता –9/15)। इसका तात्पर्य यह है कि 'शरीर, इन्द्रिय और मन द्वारा होने वाले समस्त कर्मों में, मायामय गुण ही गुणों में बरत रहे हैं– ऐसा समझना कर्तापन के अभिमान से रहित रहना संपूर्ण दृश्यवर्ग को मृगतृष्णा के जल के सदृश या स्वप्न के संसार के समान अनित्य समझना तथा एक सच्चिदानंदघन निर्गुण–निराकार परब्रह्म परमात्मा के अतिरिक्त अन्य किसी की भी सत्ता न मानकर निरंतर उसी का श्रवण, मनन और निदिध्यासन करते हुए उस सच्चिदानन्द में नित्य अभिन्न भाव से स्थित रहने का

अभ्यास करते रहना– यही ज्ञानयज्ञ के द्वारा पूजन करते हुए उसकी उपासना करना है' (गोयदका, सं0 2057)।

6. ध्यान – "ध्यान का अर्थ है, चेतन मन को एकाग्र करना, एकाग्र चेतन मन से अचेतन की गहराईयों में उतरना, अचेतन को चेतन करते हुए अतिचेतन में प्रवेश व प्रतिष्ठा"(श्रीमाली, 2000, पृ0 7. 22)। '(जहाँ चित्त को लगाया जाये) उसी में वृत्ति का एकतार चलना ध्यान है' (पा0यो0सू0– 3/2)। गोयंदका (सं0 2064) इसका अर्थ स्पष्ट करते हुए उल्लेख करते हैं–"जिस ध्येय वस्तु मे चित्त को लगाया जाये, उसी में चित्त का एकाग्र हो जाना अर्थात केवल ध्येयमात्र की एक ही तरह की वृत्ति का प्रवाह चलना, उसके बीच मे किसी भी दूसरी वृत्ति का न उठना ध्यान है।"

7. याग (पूजा)– पूजन (अर्चन) का वर्णन किया जा चुका है।

8. दान– महर्षि शण्डिल्य कहते हैं–"गीता (भागवद्गीता, 9/26) के अनुसार पत्र–पुष्प आदि से उपलक्षित सब प्रकार का दान, जो भगवान के उद्देश्य से किया गया हो, पराभक्ति का अंग है" इसका तात्पर्य यह है कि भक्त भगवान को प्रेमपूर्वक जो कुछ भी अर्पण करता है अर्थात् दान करता है भगवान उस सबको स्वीकार कर लेते हैं। इस दान से भक्ति प्राप्त होती है(शा0भ0सू0–70) ।

9. सर्वकर्मार्पण– महर्षि शाण्डिल्य ने समर्पित कर्म को भक्ति का साधन माना है। महर्षि शाण्डिल्य कहते हैं–"भगवान को समर्पित किया हुआ कर्म अपना शुभाशुभ फल देने में असमर्थ होने के कारण बंधनकारक नहीं होता उसकी वह अबंधकता ही पराभक्ति की प्राप्ति का द्वार है" (शा0भ0सू0–64)। महर्षि की मान्यता है कि भगवान को समर्पित कर्म निष्काम होने के कारण कोई भी शुभाशुभ फल नहीं देते इसलिए उनके कारण कोई बंधन नहीं होता अतएव उनसे पराभक्ति की प्राप्ति होती है। कृष्ण भगवान ने गीता (भागवद्गीता, 9/28) में अर्जुन से कहा है– "हे अर्जुनः तू जो कर्म करता है, जो खाता है, जो हवन करता है, जो दान देता है और जो तप करता है, वह सब मेरे अर्पण कर।"

4. नारद भक्ति सूत्र एवं शाण्डिल्य भक्ति सूत्र में भक्ति के साधनों संबंधी तुलनात्मक दृष्टि

नारद भक्ति सूत्र एवं शाण्डिल्य भक्ति सूत्र में भक्ति के साधनों की तुलना करने पर इनमे कुछ समानतायें व कुछ असमानतायें प्राप्त होती हैं।

4.1 समानता

1. नारद जी एवं शाण्डिल्य जी दोनों ही भक्ति (प्रेमाभक्ति) प्राप्ति का प्रमुख साधन भक्ति को मानते हैं।
2. नारद भक्ति सूत्र (37) एवं शाण्डिल्य भक्ति सूत्र (57) दोनों में श्रवण और कीर्तन को प्रेमा भक्ति की प्राप्ति का साधन बताया गया है।

4.2 असमानता

1. नारद भक्ति सूत्र में सामान्य स्तर के भक्तों के लिए की भक्ति के साधन वर्णित हैं जबकि शाण्डिल्य भक्ति सूत्र मे अधम स्तर अर्थात् पापी व्यक्तियों के लिए भी भक्ति के साधन वर्णित हैं। शा0भ0सू0 में पहले ज्ञानपरक साधनों व गौणी भक्ति द्वारा अंतःकरण की शुद्धि की बात कही गयी है।
2. नारद भक्ति सूत्र में भक्ति का साधन केवल भक्ति को ही माना गया है ज्ञान को नहीं। इसके विपरीत शाण्डिल्य भक्ति सूत्र में प्रत्यक्षतः तो ज्ञान को भक्ति का साधन नहीं बताया परन्तु परोक्ष रूप से उन्होंने भक्ति का साधन ज्ञान को भी माना है (शा0भ0सू0 –27, 28)। यह भी कहा जा सकता है कि शा0भ0सू0 में भक्ति प्राप्ति के बौद्धिक साधनों का उल्लेख हुआ है ना0भ0सू0 में नहीं।
3. नारद भक्ति सूत्र में प्रेमाभक्ति की प्राप्ति का सर्वप्रमुख साधन महापुरूपों की कृपा अथवा भगवत्कृपा को माना है (ना0भ0सू0–38)। शाण्डिल्य भक्ति सूत्र में इसका उल्लेख नहीं है।
4. शाण्डिल्य भक्ति सूत्र में व्रत, नमस्कार, ज्ञानयज्ञ, ध्यान, पूजा, दान, सर्वकर्मार्पण आदि गौणी भक्तियों को प्रेमा भक्ति का साधन माना है (शा0भ0सू0–58)। नारद भक्ति सूत्र में इनका उल्लेख नहीं है।
5. नारद भक्ति सूत्र में विषयत्याग व संगत्याग को प्रेमा भक्ति प्राप्ति का साधन माना गया है (ना0भ0सू0–35)। शा0भ0सू0 में इसका उल्लेख नहीं है।

5. नारद भक्ति सूत्र एवं शाण्डिल्य भक्ति सूत्र भक्ति के साधन संबंधी वैशिष्ट्य

ना0भ0सू0 एवं शा0भ0सू0 दोनों ही स्वयं में विशिष्टता लिए हुए हैं। इनका प्रधान वैशिष्ट्य यह है कि नारद भक्ति सूत्र सामान्य स्तर के एवं भावना प्रधान व्यक्तियों हेतु है जबकि शाण्डिल्य भक्ति सूत्र सामान्य एवं पापी सभी स्तरों के एवं साथ ही बौद्धिक व भावनाशील दोनों प्रकार के व्यक्तियों हेतु है। सामान्य स्तर का भावना प्रधान व्यक्ति ना0भ0सू0 में बताये गये भक्ति के साधनों को ग्रहण करके प्रेमा भक्ति प्राप्त कर सकता है। बुद्धि प्रधान पापी व्यक्ति शाण्डिल्य भक्ति सूत्र में बताये गये ज्ञानपरक साधनों द्वारा अंतःकरण की शुद्धि के पश्चात् प्रेमा भक्ति के योग्य बन सकता है। भावना प्रधान पापी व्यक्ति एवं सामान्य व्यक्ति शाण्डिल्य भक्ति सूत्र

में बताये गये गौणी भक्ति का अवलंबन लेकर पापक्षयपूर्वक अंतःकरण की शुद्धि होने पर प्रेमा भक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान समय की समस्त समस्याओं वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय समस्त समस्याओं का एकमात्र समाधान भक्ति है। दुःखों व परेशानियों से संतप्त मानवता को आज जिस शीतलता व शांति की आवश्यकता है वह भक्ति ही उसे प्रदान कर सकती है। इस संदर्भ में नारद भक्ति सूत्र व शाण्डिल्य भक्ति सूत्र में बताय गये भक्ति के साधनों को मनुष्य अपनी प्रकृति के अनुसार जीवन मे समाविष्ट करके प्रेमा भक्ति की प्राप्ति कर सकता है। यह प्रेमा भक्ति भक्तिमय जीवन का शिखर है इसे पाकर प्रत्येक स्तर की समस्याओं का समाधान तो संभव है ही साथ ही भगवत्प्राप्ति भी की जा सकती है।

==========

शिखा रानी, पी0एच0डी0, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत।

==========

संदर्भ सूची

सा तवस्मिन् परमप्रेमरूपा। ना0भ0सू0–2

स्वयं फलरूपतेति ब्रह्मकुमाराः। ना0भ0सू0–30

तत्तु विषयत्यागात् संगत्यागाच्च। ना0भ0सू0–35

अव्यावृतभजनात्। ना0भ0सू0–36

लोकेऽपि भगवदगुणश्रवणकीर्तनात्। ना0भ0सू0–37

मुख्यतस्तु महत्कृपयैव भगवत्कृपालेशाद्वा। ना0भ0सू0–38

बुद्धिहेतुप्रवृत्तिराविशुद्धेरवघातवत्। शा0भ0सू0–27

तदंगानां च। शा0भ0सू0–28

रागार्थप्रकीर्तिसाहचर्याच्चेतरेषाम्। शा0भ0सू0–57

अंतराले तु शेषाः स्युरूपास्यादौ च काण्डत्वात्। शा0भ0सू0–58

अबन्धोऽर्पणस्य मुंखम्। शा0भ0सू0–64

पत्रादेर्दानमन्यथा हि वैशिष्टयम्। शा0भ0सू0–70

हिय फटहुँ फूटहुँ नयन जरउ सोतन केहि काम।

द्रवहिं स्रवहि पुलकहिं नहीं तुलसी सुमिरत राम।। दोहावली–41

त्यागः स्नेहस्य यत्तयागो विषयाणां तथैव च। शांतिपर्व, महाभारत –192/17

समदरसी मोहि कह सब कोउ। सेवक प्रिय अनन्य गति सोउ।।

सो अनन्य जाके असिमति न टरइ हनुमंत। मै सेवक सचराचर रूप स्वामी भगवंत।। रामचरितमानस–4/3

यो ऽसौ भगवति सर्वभूतात्म न्यनयनात्म्ये ऽनिरूक्तंऽनिलयने परमात्मानि वासुदेवेऽनन्यनिमित्त भक्तियोग लक्षणो नानागतिनिमित्ताविद्याग्रंथिरंधनद्वारेण यदा हि महापुरूष प्रसंगः। श्रीमद्भागवत–5/19/20.

श्रवणं कीर्तनं विष्णोःस्मरणं पादसेवनम्। अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्।। श्रीमद्भागवत–7/5/23

विषयान् ध्यायतश्चित्तं विषयेषु विषज्जते। मामनुस्मरनश्चितं मय्येव प्रविलीयते।। श्रीमद्भागवत–11/14/27

अविस्मृतिः कृष्णदारविन्दयोः क्षिणोत्यभद्राणि शमं तनोति च। सत्वस्य शुद्धिं परमात्मभक्तिं ज्ञानं च विज्ञानविरागयुक्तम्।। श्रीमद्भागवत – 12/12/54

सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढ़व्रताः। नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते।। श्रीमद्भगवद्गीता– 9/14

ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते। एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम्।। श्रीमद्भगवद्गीता –9/15

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।। श्रीमद्भगवद्गीता –9/22

पत्रं पुष्पं फलं तोय यो में भक्त्या प्रयच्छति। तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।। श्रीमद्भगवद्गीता –9/26

यत्करोषि यदशनासि यज्जुहोषि ददासि यत्। यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरूष्व मदर्पणम्।। श्रीमद्भगवद्गीता – 9/27

स्थानं हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च। रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः।। श्रीमद्भगवद्गीता –11/36

ओशो (2001). *अथातो भक्ति जिज्ञासा (भाग 1 व 2)*। पुणे : रेबल पब्लिशिंग हाऊस प्रा0लि0, 50, कोरेगाँव पार्क।

ओशो (2003). *महर्षि नारद पर प्रीति प्रवचन सूत्र*। पुणे : ताओ पब्लिशिंग प्रा0लि0।

उपाध्याय, श्री बलदेव (1998). *शाण्डिल्यभक्तिसूत्रम् श्रीनारायणातीर्थविरचितया भक्तिचंद्रिकया समन्वितम्*। वाराणसीः संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय।

कोवेल, ई. बी. (1878). *द अफोरिज्म ऑफ शाण्डिल्य विद द कमेंट्री ऑफ स्वप्नेश्वर ऑर द हिन्दू डॉक्टराइन ऑफ फेथ*। कैलकटाः एशियाटिक सोसायटी ऑफ बेंगाल।

गोयंदका, जयदयाल (सं0 2057). *भगवद्गीता तत्वविवेचिनी हिंदी टीका*। गोरखपुरः गोविंदभवन कार्यालय, गीताप्रेस। पृ0 402।

गोयंदका, हरिकृष्णदास (सं0 2058). *योगदर्शन* / पांतजल योग सूत्र –3 / 2। गोरखपुरः गोविंदभवन कार्यालय, गीताप्रेस।

गोस्वामी, वैष्णवाचार्य चंदन (2013). *वे टू लवः ए कमेंट्री ऑन द नारद भक्ति सूत्र* / ओडीव पब्लिशिंग।

चिन्मयानंद, स्वामी (2002). *नारद भक्ति सूत्र* / मुम्बईः सेंट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट।

तैमनी, आई. के. (2003). *सैल्फ रिइलाइजेशन थ्रू लव (नारद भक्ति सूत्राज)* / अड्यार (मद्रास): थियोसॉफिकल पब्लिशिंग हाउस।

ताओशोबुद्धा (2009). *द सीक्रेट्स ऑफ भक्ति एज़ नेरेटेड बाय सेज़ नारद* / न्यू डेलहीः स्टर्लिगं पब्लिशर्स (प्रा0) लि0।

त्यागीशानंद, स्वामी (2014). *नारद भक्ति सूत्रा* / माइलापोर (चेन्नई): श्री रामकृष्ण मठ।

पोद्दार, हनुमान प्रसाद (सं0 2060). *प्रेम–दर्शन (देवर्षि नारद विरचित भक्ति सूत्र)* / गोरखपुरः गोविंदभवन कार्यालय, गीताप्रेस।

पोद्दार, हनुमान प्रसाद (1998). *कल्याण भागवतांक* / *वर्ष–16* / गोरखपुरः गोविंदभवन कार्यालय, गीताप्रेस।

पण्ड्या, प्रणव (1990). एक मनश्चिकित्सक के रूप में पूज्य आचार्य श्री। *अखण्ड ज्योति, 53* (10)। पृ–50।

पण्ड्या, प्रणव (2007). सब कुछ पाया है पर खोया है अपनापन और सुकून। *अखण्ड ज्योति, 71* (10)। पृ0 4।

पण्ड्या, प्रणव (2015, अ,आ,ई). *भक्तिगाथा नारदभक्तिसूत्र का कथाभाष्य* / हरिद्वारः वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शांतिकुंज। पृ0– 148, 152, 156।

प्रभुपाद, स्वामी ए. सी. भक्तिवेदांत (1998). *नारद भक्ति सूत्रः द सीक्रेट्स ऑफ ट्रांसडेंटल लव* / जुहु (मुम्बई– 4): भक्तिवेदांत बुक ट्रस्ट, हरे कृष्ण धाम।

प्रभवानन्द, स्वामी (2011). *नारद'ज वे ऑफ डिवोशन लव (नारद भक्ति सूत्राज)* / मद्रासः रामकृष्ण मठ।

प्रकाश, प्रेम (1998). *द योग ऑफ स्प्रिचुअल डिवोशनः ए मॉडर्न ट्रांसलेशन ऑफ द नारद भक्ति सूत्र* / रोचेस्टर (वरमोन्ट): इन्नर ट्रेडीशन इंटरनेशनल।

भूतेशानन्द, स्वामी (1999). *नारद भक्ति सूत्राज़* / मायावती (चंपावत): स्वामी मुमुक्षानन्द, प्रेजीडेन्ट अद्वैत आश्रम।

भाई जी, किरीट (2006). *शाण्डिल्य भक्ति सूत्र* / दिल्ली–20: डायमण्ड पॉकेट बुक्स (प्रा0) लि0।

महाराज, स्वामी ज्ञानानन्द (1998). *भक्तिदर्शन* / मुम्बईः खेमराज श्री कृष्णदास प्रकाशन।

महोनी, विलियम के0 (2015). *एक्सक्वीसाइट लवः रिफ्लेक्शंस ऑन द स्प्रिचुअल लाइफ बेस्ड ऑन नारदंज भक्ति सूत्र* / यू0एस0ए0: सर्वभाव प्रेस।

यति, त्रिदण्डी श्री भक्ति प्रजनन (1991). *शाण्डिल्य भक्ति सूत्र* / मद्रासः श्री नित्यानन्द ब्रह्मचारी, श्री गौडिया मठ।

रविशंकर, श्री श्री (2009). *नारद भक्ति सूत्र (अफोरिज्म ऑफ लव)* / बैंगलोर (कर्नाटक): श्री श्री पब्लिकेशन ट्रस्ट।

विवेकानन्द, स्वामी (1994). *नारद भक्ति सूत्र एवं भक्तिविवेचन* / नागपुरः श्रीरामकृष्ण मठ।

बेदांतानंद, स्वामी (2001). *नारद भक्ति सूत्र* / नागपुरः श्रीरामकृष्ण मठ।

शर्मा, वाई सुब्रहमण्य (1938). *नारद'ज अफोरिज्म ऑन भक्ति* / होलेनारसीपुर (मैसूर): द अध्यात्म प्रकाश कार्यालय।

शिवानन्द, स्वामी (1984). *भक्ति एण्ड संकीर्तन* / शिवानन्द नगर (ऋषिकेश): द डिवाइन लाइफ सोसायटी पब्लिकेशन।

शर्मा, पं0 श्रीराम (1990). *भाव संवेदनाओं की गंगोत्री* / हरिद्वारः युग चेतना प्रकाशन शांतिकुंज। पृ0–2

सरस्वती, स्वामी विज्ञानानन्द (1998 अ,आ,इ). *योग विज्ञान* / मुनि की रेतीः योग निकेतन ट्रस्ट। पृ0–194, 189, 190

सरस्वती, स्वामी श्री अखण्डानन्द (2003). *नारदभक्तिदर्शन* / मुम्बईः सत्साहित्य प्रकाशन ट्रस्ट।

सरस्वती, स्वामी अभयानन्द (2011). *शाण्डिल्य भक्ति सूत्र* / लखनऊः श्री शौनक सुधा प्रकाशक समिति।

हर्षानन्द, स्वामी (2002). *शाण्डिल्य भक्ति सूत्र : विद स्वप्नेश्वर भाष्य* / नागपुर : श्री रामकृष्ण मठ।

श्रीमाली, मंदाकिनी (2001). *प्रज्ञापुरूष का समग्र दर्शन* / मथुराः अखण्ड ज्योति संस्थान। पृ0–7.22